दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-8

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF OPT-23 **HL-2308**

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Karmveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 8 / 10 Aug 2022

2nd attempt

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]: 0 8 5 2 6 7 2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

प्रस्तुत पद्यांश बाल कृष्ण भट्ट के 'साहित्य जनसमूह के हृदय के विकास' से लिया गया है। जिसमें भट्ट जी ने साहित्य के विकास से जनता की चित्तवृत्तियों पर प्रतिबिम्बता को दृष्टिपात किया है।

भट्ट जी कहते हैं कि समस्त हिन्दू जाति अलग-अलग भागों में बँट गई है अगर यह अलग-अलग सम्प्रदायों में विभाजित हो गई है तो एकता में कमी आ गई है। अब हिन्दू जाति के अनेक-अनेक भाग हो गए हैं जिससे सबका एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अलग-अलग धर्म व मान्यताएँ हो गई हैं। यह विभाजन एकता में बाधकता सुनिश्चित करता है

विशेष

(I) हिन्दू जाति की एकता केन्द्रीय संवेदना है।

(II) मनोवैज्ञानिक बिंबों को समाया गया है।

(III) प्रसंग आज भी प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

यशपाल प्रगतिवादी रचनाकार है वे अपने उपन्यास 'दिव्या' के माध्यम से नारी समस्या को केन्द्रीयता में लाने का प्रयास कर रहे थे। यह गद्यांश भी 'दिव्या' से लिया गया है।

पृथुसेन जब दिव्या से प्रेम करता है तो प्रेस्थ (पिता) उसे नारी की भोगवादी प्रेमदृष्टि से ज्ञात करवाते हैं साथ ही वर्णव्यवस्था की समस्या भी शुरुआत में दिखती है।

प्रेस्थ कहता है- पृथुसेन तुम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैं सम्पूर्ण जीवन के प्रयासों को एक युवती के प्यार मे ख्वाब नही कर सकते है। स्त्री तो सामर्थ्यवान मनुष्य अनेक प्राप्त कर सकता है। बुद्धि भ्रम होने पर कोई पुरुष स्त्री के प्रति बलिदान देता है, इस तरह का कार्य पतन के द्वार की ओर ले जाएगा। नीति मे भी यही कहा गया है।

विशेष

(i) नारी की भोगवादी चेतना का पुट मिलता है।

(ii) भाषा प्रवाहपूर्ण तथा तत्समतापूर्ण है।

(iii) निगमनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर.... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश कृष्ण बलदेव वैद की कहानी 'मेरा दुश्मन' से लिया गया है।

बलदेव वैद लिखते है कि मनुष्य मान्यताओं को पहाड़ बना रहा है। पत्थर का बहुत बड़ा ढेर जिस पर लोग पत्थर मार रहे है, फूल चढ़ा रहे है मान्यताओं पर। लेकिन आदमी इससे आदमी का शोषण कर रहा है। नारी की समस्याओं को लोग समझ नही रहे है, नारी के शरीर को रस्सी से बांध रहे है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(i) मान्यताओं / अंधविश्वासो की रूढ़िवादिता पर चोट की गई है।

(ii) बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

(iii) छायावादियों को भाषायी दुरूहपन लग सकता है।

(iv) अलंकारिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

जयशंकर प्रसाद इतिहास के अध्येता थे, साहित्य के सर्जक। इसी क्रम में उन्होंने स्कंदगुप्त की रचना की। प्रस्तुत गद्यांश भी स्कंदगुप्त से लिया गया है।

ये पंक्तियाँ स्कन्दगुप्त के आरम्भिक अंश से ली गई है। मालव के राजा बन्धुवर्मा की बहन देवसेना तथा श्रेष्ठि कन्या विजया के मध्य वार्तालाप चल रहा है। देवसेना विजया को संगीत का महत्व समझा रही है।

देवसेना कहती है जितने भी भौतिक वस्तुएँ है, सब मे परमाणु का एक क्रम होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जब कोई परमाणु हिलता है तो परमतत्व वायवीय अभिव्यक्ति से थिरकते लगता है मनुष्य के स्वर वीणा में शीघ्र नहीं मिलता, इसके अलावा पक्षियों, कोयल आदि सभी के सुर एक परम सत्ता मे अभिव्यक्त है।

विशेष -

(i) संगीत की महत्वत्ता को दर्शाया गया है।
(ii) चल-चल, छल-छल, छल-छल बुंदर प्रयोग है।
(iii) प्रत्येक की 'असाध्यवीणा' मे भी परम तत्व का वर्णन आया है।
(iv) प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

प्रेमचंद ने 1936 मे गोदान का लेखन कार्य किया। यह युग संक्रमणवाद का दौर था, जब सामन्ती व्यवस्था का अन्त हो रहा था और पूँजीवादी व्यवस्था का जन्म हो रहा था।

'गोदान' उपन्यास मे 'होरी' तथा 'गोबर' दो पात्र है, होरी जहाँ सामन्तवाद को दिखाता है, वही गोबर पूँजीवाद को चित्रित करता है।

होरी एक सामान्य किसान जिसके लिए धर्म, बिरादरी, मरजाद ही मुख्य है। वह सोचता है -
"खेती मे जो मरजाद है वह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

किसी और मे तो नही"

साथ ही ब्राह्मण व्यवस्था के बारे मे

"किसी और के रुपये होते तो खा भी जाता लेकिन ब्राह्मण के रुपये हड्डी तोड़ के निकलेंगे"

इन जात, बिरादरी संघर्षों मे होरी गाय की लालसा लिए जीवन जीता है और अन्त तक आते-आते संघर्षों से थक जाता है और मरता है.

"जाने दे धनिया, और कितना ~~जिला~~ जलाएगी, गाय की इच्छा मन मे रह गई"

होरी उस सामन्तवादी शोषण व्यवस्था से पीड़ित चरित्र था।

गोबर एक क्रान्तिकारी चरित्रवाला ~~युवक था~~ युवक था जो शुरुआत से ही सामन्तवादी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जात-बिरादरी पंच प्रणाली का विरोध करता है।

"ये सब के सब मुफ्त में कुछ नही देते, सूद लेते है।"

साथ ही इसके माध्यम से शहरी प्रणाली में हो रहे शोषण को दिखाया गया है, साथ ही विधवा विवाह की समस्या भी इसी से इंगित होती है। साथ ही गोबर कहता है.

"वह अकेला एक सौ कमाएगा, नही तो लोग कहेंगे मजूरी करता है. मजूरी करना पाप तो नहीं है।

वस्तुत: दोनो पात्र ही संभावनाशील है लेकिन एक को चुनना हो तो मैं होरी को चुनूँगा। होरी के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक समस्या का जो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चित्रण प्रेमचंद ने दिखाया है वह आज भी भारतीय गाँवों मे जागृत हो रहा है।

* होरी की मौत भारत के लोकतंत्र तथा स्वाधीनता आंदोलन के नेताओं के सामने प्रश्न खड़ा करती है कि कैसे किसान पीड़ित दशा मे लगातार वृद्धि हो रही है।

* साथ ही दहेज समस्या, जाति समस्या, साहूकारी प्रणाली को होरी के माध्यम से संभावनाशील है।

गोदान के माध्यम से प्रेमचंद ने तत्कालीन भारत की यथार्थवाद की आँखे देख रही है इसीलिए रामविलास शर्मा कहते है- अगर 1920-40 का इतिहास खो जाए तो प्रेमचंद का इतिहास पढ़कर ठीक-ठीक अनुमान लगा सकते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल मनोवैज्ञानिक निबंधकार है। वे अपने सर्वप्रथम अपने निबंध विषयों को परिभाषित कर उन्हें उदाहरणों के माध्यम से समझाते रहते है। इसी क्रम में श्रद्धा-भक्ति निबंध से शैली की विशिष्टताएँ देखी जानी चाहिए-

* शुक्ल जी सूत्र शैली का प्रयोग करते है जब वे छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करके बड़े-बड़े कथ्यों की अनुभूति करा देते है।

श्रद्धा और प्रेम का योग भक्ति है

* शुक्ल जी भाषा शब्दो मे मितव्ययी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

थे, वे पूरा निबंध कस-कस का शब्दावली का प्रयोग करके लिखते है।

उदा. भक्ति मे श्रद्धालु, श्रद्धेय, श्रद्धेप का भाव तीन पक्ष होते है।

+ शुक्ल जी के निबंधों मे मनोवैज्ञानिक विषयों / अमूर्त विषयों ~~मे~~ रुचिकर विषय बनाए जाते है जो यहाँ भी दिखता है।

उदा. श्रद्धा, प्रेम, भक्ति।

+ शुक्ल जी विवेकवादी दृष्टिकोण का प्रभाव यह था कि प्रेम, श्रद्धा, भक्ति के अंतरों को काफी सूक्ष्मता से व्यक्त किया है।

+ शुक्ल जी ने सामाजिक कल्याण को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्य का लक्ष्य बनाया है, इसीलिए निबंध शैली मे "शील संबंधिनी श्रद्धा" को महत्ता प्रदान करते है।

+ निबंधों को लोक जागरण के क्रम में जोड़कर श्रद्धा तथा भक्ति भाव को दिखाया गया है।

यह कहना उचित होगा शुक्ल जी निबन्धकार मे उस बिन्दु है जहाँ पर अभी तक कोई निबन्धकार नही पहुंच पाया है, और उनके निबंध ही एक प्रतिमान माने गए है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' में यशपाल का वैचारिक हस्तक्षेप उपन्यास के रचना-कौशल का अतिक्रमण करता है- इस मत का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल मार्क्सवादी रचनाकार है। दिव्या में इसी प्रगतिवादी पुट के परिप्रेक्ष्य मे इसे समझा जाना चाहिए।

'दिव्या' का कालक्रम उस समय का है जब मार्क्सवाद की उत्पत्ति भी नही हुई थी तो स्थूलता से प्रक्षेपण संभव नही था लेकिन कही-कहीं मार्क्सवाद दिखता है -

(1) भाग्यवाद का खंडन

"भाग्य का अर्थ है अज्ञानता, कर्मफल का अर्थ है- विवशता का कारण न पता होना। इससे आगे भाग्य व कर्मफल कुछ नहीं।

(2) मानववाद को समर्थन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राक्कथन मे यशपाल लिखते है

"मनुष्य भोक्ता नही कर्ता है. सम्पूर्ण माया मनुष्य की क्रीड़ा है।"

(iii) साथ ही विवाह व्यवस्था को शोषण का कारण माना गया है।

दिव्या - आचार्य ! कुलदेवी के अधिकार... स्त्री पुरुष का प्रश्रय मात्र है, वह उसका सम्मान नहीं उसे भोगने वाले पुरुष का सम्मान है।

(iv) इसके साथ ही अनेक जगह मार्क्सवाद का पुट मिलता है।

यह प्रयास यशपाल ने लोकायत दर्शन के माध्यम से व्यक्त किया है. साथ ही आधुनिक युग में नारी की समस्याओं को दिखाने के क्रम मे दिखायी गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोकायत सम्प्रदाय में जड़ से चेतना पैदा होती है। सम्पूर्णता का अनुभव जगत में ही संभव है, न कि कोई परम सत्ता।

अतः एक आधुनिक रचनाकार के नाते यशपाल ने अपनी विचारधारा का थोपन नहीं किया है, सभी पात्रों को स्वतंत्रता दी गई है। अगर कहीं मार्क्सवादी पुट मिलता भी है उसे इसी प्रकार देखा जाना चाहिए कि शत-प्रतिशत वस्तुनिष्ठता संभव नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित पुस्तक 'एक दुनिया समानान्तर' में निर्मल वर्मा की परिन्दे कहानी से लिया गया है।

परिंदे कहानी में कहानी की नायिका 'लतीका' के माध्यम से प्रेम संबधी आधुनिक मानव की नियति को पकड़ने का प्रयास किया जाता है जिसमें मुखर्जी, हुबर्ट इत्यादि के साथ कथानक को बुना गया है।

नायिका लतीका सोचती है कि मेरे पीछे कोई नही है इससे एक अजीब सा भाव पैदा होता है, क्योंकि आखरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अफसर की मौत हो चुकी है लेकिन यह मौत में जिन्दगी भर नहीं भुला पाऊँगी। इसलिए मैं इसे ट्रेजिक भी नहीं कह सकती।

विशेष → खड़ी बोली (तत्सम शब्दो की बहुतायत)
→ वियोग शृंगार

- आधुनिक कालीन प्रेम विषयों की नियताप्ति को दिखाया गया है।
- भाषा प्रवाहपूर्ण तथा मधुर है।
- अंग्रेजी के शब्दो का कथानक अनुसार प्रयोग किया है।

ट्रेजिक

- उर्दू शब्द बेफिक्री का प्रयोग सराहनीय है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य के समृद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद की प्रतिनिधि रचना 'स्कंदगुप्त' से गद्यांश लिया गया है।

प्रसाद साहित्य के आवरण मे अपना दर्शन 'आनंदवाद' को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिसे स्कंदगुप्त, कामायनी इत्यादि रचनाओं में देखा गया है। यहाँ भी रचना के अन्त मे देवसेना द्वारा आनंदवाद दर्शन के पक्ष में यह अभिव्यक्त किया गया है।

देवसेना कहती है कितने भी सुखों का भोग कर लें, अन्त मे दुख मिलेगें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सभी सुखों का अन्त होता अन्त में दुखी अवस्था पर जाकर सम्पूर्ण होते है तो सुख का योग करना ही नहीं चाहिए। अतः इस जीवन मे सुख की अपेक्षा ~~भोग~~ आनन्दवाद की तरफ प्रयास किया जाना चाहिए।

विशेष

1. 'आनंदवाद' पवृत्ति की अनुभूति प्राप्त होती है।
2. मार्क्सवाद के विपरीत 'आनंदवस्था' की अनुभूति होती है।
3. भाषा तत्सम शैली मे है, जिसका प्रयोग का रचना बहुगुणित हो गयी है।
4. सूत्र निगमनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहनराकेश हिन्दी साहित्य के आधुनिक नाटककारों में प्रतिनिधि नाटककार है। प्रस्तुत पद्यांश भी इनके नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है, जिसमें अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रभाव देखा जाता है।

कालिदास जब गॉव मे रहकर ही वर्षा मे भीगकर कविताऐं लिखता और अपनी सार्थकता महसूस करता, जब वह वहाँ था तब आर्थिक समस्या मौजूद थी, वही जब काश्मीर का राजा बन गया तो आर्थिक समस्या तो दूर हो गई, लेकिन सार्थकता / अस्तित्व पर लेकर की समस्या सामने आने लगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कालिदास मल्लिका से कहता है,
संभवत: तुम मुझे पहचानती नही हो
और तुम सही भी हो क्योंकि अपने
निर्णयों से ऐसे फैसले लिए जिससे
मै खुद अपनी सत्ता को भूल गया हूँ
मै खुद को नही पहचान पाता हूँ।

विशेष

(i) अस्तित्वादी विचारधारा का पुट मिलता है।

(ii) भाषा प्रवाहपूर्ण तथा खड़ी बोली मे लिखा गया है।

(iii) आत्मकथात्मक शैली अपनायी गई है।

(iv) अस्तित्वादी विचारधारा पर सार्त्र, काम्यू जैसे विचारकों का प्रभाव दिखता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

सामान्य दृष्टि से देखे तो आंचलिकता तथा राष्ट्रीयता दोनों विपरीत दृष्टिकोण प्रतीत होते है। जहाँ आँचलकिता में अंचल को नायकत्व के केन्द्र मे रखकर कथानक बुना जाता है, वही राष्ट्रीयता में राष्ट्र परिप्रेक्ष्य में लिया जाता है।

फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल उपन्यास की शुरुआत में कहते है- यह है मैला आँचल- एक आंचलिक उपन्यास। फिर भी हिन्दी समीक्षकों ने इस उपन्यास को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समीक्षकों के अनुसार रेणु ने जिस आँचल का वर्णन किया है, उस तरह के गाँव भारत के हर कोने-कोने मे मिल जाते हैं जिससें समीक्षकों के अनुसार आंचलिकता सें आगें निकलकर यह राष्ट्रीयता कों धारण कर लेता है।

आँचलिकता के वर्णन के क्रम में रेणु लिखते हैं-

"मेरीगंज एक बड़ा गाँव है, बारह वर्णों के लोग यहाँ रहते हैं गाँव के पुरब मे एक धारा बहती है, बरसात में कमला भर जाती है।"

ऐसे गाँव भारत कें हर राज्य के जिले मे पाए जाते हैं।

वही आगें के क्रम मे रेणु ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मेरीगंज गाँव के सामाजिक, आर्थिक - राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चित्र खींचे है। यहाँ ध्यान देने योग्य यह है कि इनके वर्णन में रेणु ने यथार्थवाद का प्रयोग किया है और खुद की विचारधारा के क्षेपण से बचे है।

सामाजिक

गाँव मे चार प्रकार के लोग है- कायस्थ, राजपूत, यादव, हरिजन।

सांस्कृतिक

नायक जी, ओ नायक जी
खोल देओ किवड़िया जी
ओ नायक जी।

ये वर्णन सभी भारतीय गाँवों में दिखती है, इसी के साथ अंधविश्वास, गरीबी, स्वास्थ्य समस्याओं मे कमी,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाति व्यवस्था का दर्प चित्रण भारत के हर गॉव की दासता है।

अगर तुलना गोदान से करे तो हम पाते है। गोदान में जहॉ प्रेमचन्द 'अवधी तथा बेलारी प्रान्त, जिला बताने की जरूरत नही है' कहकर राष्ट्रीयता का स्वरूप प्रदान कर रहे है, वही रेणु अपने कथा-कौशल से मैला ऑचल को राष्ट्रीय उपन्यास बना देते है।

मेरे अनुसार मैला ऑचल वह उपन्यास है जो तत्कालीन भारत के हर गॉव की सूक्ष्म दृष्टि को साहित्य के पर्दे पर उभारने मे सफल रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

प्रेमचंद मनोवैज्ञानिक कहानीकार है जो अपनी हर कहानी मे एक समस्या को उठाकर विश्लेषण करते है। 'पूस की रात' कहानी में किसान की समस्या, 'सद्गति' मे दलितों की समस्या तथा 'बूढी काकी' में वृद्धो की समस्या को दृष्टिपात किया है।

अलग्योझा इस दृष्टि से अनूठी कहानी है, इसमें एक साथ कई समस्याओं को उठाया गया है। कृषक समस्या, टूटते संयुक्त परिवार की समस्या, वैधव्य की समस्या, महिला की आर्थिक निर्भरता आदि उल्लेखनीय समस्याएँ कथ्य मे नजर आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भोला अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद पन्ना से शादी करता है। भोला के पुत्रों 'रग्घु' तथा 'केदार' के माध्यम से संयुक्त परिवार को दिखाया है।

भोला की मौत के बाद जिस प्रकार रग्घु परिवार को संभालकर अपने छोटे भाई-बहनों को संभालता है, साथ ही पन्ना की दिखाई गई मजबूरी महिला की आर्थिक निर्भर न होने को इंगित करती है।

इसी प्रकार मुलिया की शादी के बाद उसका पन्ना से अलग होकर एकल परिवार बनाना पारिवारिक कलह को दिखाता है जिसमें केदार द्वारा घर की मदद की जाती है। यहाँ मुलिया द्वारा भी विषय वैविध्य की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समस्या दिखाई है।

अन्त में रग्घु की मौत के बाद पूरे परिवार का ध्यान पन्ना के पुत्रों के माध्यम से रखा जाता है तभी प्रेमचंद कहते है- "संयुक्त परिवार ही असली जीत है।"

शिल्प के स्तर पर देखे तो कथा मे हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग हुआ है, साथ ही सूत्र-निगमनात्मक भाषा शैली का प्रयोग हुआ है।

'अलग्योझा' प्रेमचंद की शुरुआती कहानियों मे से है जहाँ आदर्शवाद, गाँधीवाद से प्रभावित होकर वे रचना कार्य कर रहे थे। इसी क्रम में संयुक्त परिवार की महत्ता के लिए अलग्योझा का कथ्य शानदार है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नाटकीयता' नाटक का वह तत्व है जिसमें कथानक में विपरीत द्वन्द्वों की भावना को दिखाकर भाव-प्रवण क्षमता में वृद्धि की जाती है।

'महाभोज' नाटक में मन्नू भंडारी का सर्वप्रथम तो नामकरण ही नाटकीयता समावेशित करता है कि अचानक पाठक को यह नाम अचरज मे डाल देता है।

तत्पश्चात नाटक के कथानक में बिंदा, महेश के संघर्ष मे नाटकीयता के तत्व दिखते हैं, जब महेश उदासीन हो जाता है तब बिंदा उसे अभिप्रेरित करता है। महेश कहता है-

'बेकायदा लड़ता था हमसे। कहता था कि तुम जैसे पढ़े-लिखे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोग उनकी आवाज नहीं उठायेंगे तो कौन उठाएगा।"

इस के साथ ही राजनीतिक विकृति के चित्रण में दा साहब, दत्ता साहब (पत्रकार), जोरावर (क्रान्तिकारी राजनीतिक युवक) के द्वन्द्व से नाटकीयता में वृद्धि होती है।

"इन ससुरे हरिजनो की हमारे बाप-दादों के सामने कमर झुके टेढ़ी हो जाती थी. अब यह हमे सीना दिखाये, देखा नही जाता"

"किसी बात को अपने मन मे होने वाली उथल-पुथल मे रखकर किया जाए, यह गुर कोई दा साहब से सीखे"

वही महाभोज की भाषा भी नाटकीयता का समावेशित करती है, जिसमे कहावतें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहती है-

"अभी थोड़े दिन पहले की तो बात है, हरिजनो के झोपड़ियों मे आग लगा दी थी।"

साथ ही नाटकीयता के अनुरूप S.P सक्सेना द्वारा दिनेश को युद्ध मे अकेले छोड़ देने का आत्म संघर्ष भी नाटकीयता को धारण करता है।

अतः हम कह सकते है नाटकीयता के प्रभाव से महाभोज की प्रभाव क्षमता बहुगुणित हो गयी है जिसकी प्रासंगिकता आज भी जिन्दा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

'त्रासदी' पश्चिमी साहित्य में साहित्य नाटक विधा का लक्षय माना जाता है, जिसमें नायक नैतिकतापूर्ण, उदात्त होते हुए कुछ नीतिगत भूल कर देता है। (हैमर्शिया) जो कि उसके अन्त का कारण बनता है, यह त्रासदी कहलाती है।

भारत दुर्दशा को त्रासदी कहने से पहले त्रासदी के समीक्षकों द्वारा निर्धारित प्रतिमानों पर विचार किया जाना चाहिए-

(क) नायक उदात्त होना चाहिए
(ख) कथानक का वक्र होना।
(ग) हैमर्शिया (नीतिगत भूल)
(घ) नायक सत्य संघर्ष की ओर झुकाव रखता हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थूल दृष्टि से देखे तो हम पाते है कि 'भारत भाग्य' अपने अन्त मे बार-बार प्रयास करने पर भी उठ नही रहा है। जो कि त्रासदी को दिखाता है।

लेकिन समीक्षकों द्वारा दिए गए प्रतिमानों पर विचार करे तो हम पाते है भारत-दुर्दशा का कथानक पाँच अंको में विभाजित है जिसमें एक कमरे मे बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों की मीटिंग मे भारत भाग्य शुरुआत से ही बेहोशी में है इसे उदात्त नायक तो नहीं कह सकते।

भारत भाग्य, भारत दुर्दैव, अंधकार के स्खलित नृत्य से इतना भयभीत है कि निद्रा का स्तर बढ़

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गया है जो त्रासदी के विरुद्ध है।

जहाँ तक कथानक वक्र की बात है वह भारत-दुर्दशा के कथानक में बुद्धिजीवी वर्ग के संघर्ष में दिखती है, साथ ही पात्रों में अंतर्द्वन्द्व दिखता है जहाँ एडिटर बम-गोलों के लेख, सैनिक चूड़ियाँ पहनने इत्यादि की बातें कर रहे है। यह वक्रता को इंगित करता है लेकिन त्रासदी का कारण नहीं बनता है।

इसी प्रकार नीतिगत भूल (हैमर्शिया) तो तब होगा जब निद्रा की अवस्था से भारत-भाग्य बाहर आएगा। इसे तो स्वयं अपनी समस्याओ जैसे- आलस्य, भेदभाव, साम्प्रदायिकता ने जकड़ रखा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समीक्षकों की 'त्रासदी' की रचना ही व्यर्थ है. भारतेन्दु तो सामान्य जन-जागृत के के लिए रचनाकर्म कर रहे थे। इसमें वे सफल भी हुए। वे यथार्थवाद के क्रम को देखते हुए अन्त तक भारत-भाग्य को बेहोश दिखाया।

वे चाहते तो अन्त मे 'भारत-भाग्य' को दैवीय सहायता से सुखद अन्त कर सकते थे लेकिन जन-जागरण के क्रम मे उन्होंनें त्रासदी को स्वीकार किया।

अतः भारत-दुर्दशा की प्रासंगिकता आज भी भारतीय समाज में विद्यमान है जिन्हें दूर कर समावेशी, संधारणीय समाज का निर्माण किया जाना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फणीश्वर नाथ रेणु ने अपने उपन्यास मैला आँचल मे लिखते हैं-

"मैला आँचल- एक आंचलिक उपन्यास कथानक है पूर्णिया।"

अतः इसकी रचना क्रम में आंचलिक कथा शिल्प का प्रयोग किया।

- भाषा में रेणु आंचलिक शब्दो का प्रयोग करते हैं-

'तंत्रिमा टोली मे आज धमाधम पंचायत हो रही है'

- देशी शब्दो का प्रयोग बहुतायत तौर पर हुआ है।

'भैसचरमन, डागडरैली'

- सांस्कृतिक पर्वों का वर्णन दिखता है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नायक जी ओ नायक जी
खोल देखो किवड़िया
ओ नायक जी।

लेकिन उपन्यास में रेणु ने गाँव के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक इतिहास का प्रयोग इस तरह से किया है कि हर गाँव मैला आँचल जैसा दिखाई देता है जिससे राष्ट्रीयता का तत्व समावेशित किया जाता है।

जहाँ गोदान मे प्रेमचन्द कहते हैं "अवधी तथा बेलारी दो प्रान्त हैं जिला बताने की जरूरत नही"। वस्तुतः वे राष्ट्रीयता युक्त उपन्यास का कथानक निर्माण पर बल दे रहे थे। वही रेणु ने आंचलिक उपन्यास मे ही लिखा है -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

" गाँव का नाम है मेरीगंज बारह वर्णों के लोग यहाँ रहते हैं गाँव के पूर्व मे एक धारा बहती है"

अतः जिस प्रकार रेणु ने प्रत्येक गाँव के परिप्रेक्ष्य गाँव का वर्णन किया है तब प्रेमचंद के गोदान का गाँव मेरीगंज से जुड़ता आगे नजर आता है।

साथ ही रेणु ने आंचल का वर्णन यथार्थवाद के साथ किया है, बिना किसी विचारधारा का पुट मिलाए हुए, जो इसे गोदान के आगे की कथा निर्माण को दिखाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद मनोवैज्ञानिक कहानीकार है। तत्कालीन दौर की अनेक समस्याओं को प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दिखाया है। संयुक्त परिवार की 'अलग्योझा' में, वृद्ध समस्या 'बूढ़ी काकी' में तथा दलित समस्या 'कफन', 'सद्गति' में दिखाया है।

कफन कहानी मे घीसू तथा माधव दो पात्र है जिसमें एक की पत्नी की मृत्यु के बाद जब कफन लाने जाते है तो उनके लिए महत्वपूर्ण कफन लाना न होकर सालों से गरीबी से दबी भूख है। कफन के पैसो से वे अपना पेट भरते है। यह दिखाता है कि दलित समस्या मे कैसे पेट की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भूख अन्य समस्याओं से ऊपर नजर आती है।

साथ ही जमींदारी शोषण का भी चरम दिखता है जब दोनो भाई काम पर नही जाते, उन्हें पता है कार्य करने के बाद भी मजदूरी नही मिल पाएगी।

अतः दलित समस्या का चरम स्तर कफन कहानी में दिखाया गया है।

कुछ समीक्षक प्रेमचन्द पर दलित विरोधी होने का आरोप लगाते है क्योंकि जाति संवेदनशील शब्द 'चमार' का प्रयोग करते है। वस्तुतः यह शब्द उस समय की दलित समस्याओं की परिपूर्णता को संबोधित करता है। अगर वे दलित विरोधी होते तो अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रचना कर्म के अंत मे लिखा गया 'गोदान' उपन्यास मे भी यह शब्द प्रयोग नही करते।

प्रेमचंद ने साहित्य जगत में दलित समस्याओं का चित्रण सद्गति में जहाँ ब्राह्मण वर्ग द्वारा दलित शोषण, गोदान इत्यादि मे किया है। यह प्रेमचंद की भोगी हुई संवेदनाएँ तो नही है लेकिन प्रेमचंद सजग रचनाकार है जिससे सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता दलित समस्याओं के प्रति आकर्षित करती है।

आज के समय में समीक्षकों में एक राय है कि प्रेमचंद दलित समस्या की तत्कालीन यथार्थता का वर्णन कर रहे थे ना कि वे दलित विरोधी थे। वे तो दलित चेतना के पुरोधा साहित्यकार है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation